परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

तक्ष शिला

# हमार अंगना

अंक 4 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | सितंबर 2017

## बाल घर आँगन – संकल्पना एवं उदेश्य

बच्चों का बचपन, जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग होता हैं, जिसमें 3-6 साल के दौरान बच्चों में मानसिक और शारीरिक विकास की दर अदभुत होती हैं। यह एक ऐसा समय हैं जहा उनके व्यक्तिगत देखभाल की और सिखने के अनुभव की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती हैं। इस उम्र में बच्चें किसी भी काम को खुद से करके, छुकर, देखकर, एवं अपने अनुभव के आधार पर सिखते हैं। उन्हें स्वतंत्र होकर गतिविधि करने में मजा आता हैं।

इन्ही सारी बातो को ध्यान में रखते हुये, ग्राम नरेन्द्रपुर, सिवान में परिवर्तन नाम की एक संस्था को स्थापित किया गया हैं। जिसमें गांवों के विकास के लिए कुछ महत्वपूर्ण मुद्दा, जैसे महिलाओं का आर्थिक एवं सामाजिक शक्तिकरण, पूर्व स्कुल शिक्षा, और बचपन बिकास शिक्षा, सामुदायिक रंगमंच, सामुदायिक खेल (उमंग), कृषि हरियाली ज्ञान केंद्र, शिल्प कला, तथा बुनाई पर भी काम किया जा रहा हैं। इन्ही कामों में से बच्चों के विकास के लिए बालघर आँगन का शुरुआत किया गया हैं। बालघर आँगन कुल 40 आंगनबाड़ी केन्दों के साथ जुड़ के कार्य करती हैं। प्रत्येक केंद्र से प्रतिदिन 5 बच्चें परिवर्तन के गाड़ी से पढ़ने आते हैं, और यहाँ के शिक्षकों के द्वारा किये गये गतिविधियों को सिखते हैं। इसके अलावे वे बच्चें अपने आंगनबाड़ी केन्द्रों के अन्य बच्चों को सीखे हुये गतिविधियों को सिखाते भी हैं। कुल 8 केन्द्रों के बच्चें सप्ताह में तीन दिन आते हैं, फिर उसी सप्ताह में 8 दुसरे केंद्र के बच्चें आते हैं, यानि परिवर्तन परिसर में कुल 16 आंगनबाड़ी केन्द्रों के बच्चों के साथ क्लास करवाया जाता हैं, तथा शेष 24 अन्य केन्दों पे विजिट कर क्लास करवाया जाता हैं।

## बाल घर आँगन के द्वारा होने वाली गतिविधियाँ

क्लास में सबसे पहले बच्चों को कतारबद्ध खड़ा करा कर प्रार्थना एवं व्यायाम करवाया जाता हैं। फिर उन्हें गोले में बैठाकर हाथ पैर को फैलाते हुये विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से अवगत करवाया जाता हैं। उसके बाद तरह तरह के वस्तुओं की पहचान एवं अलग अलग आवाज की पकड़ करवाया जाता हैं, जिससे बच्चों का मानसिक विकास हो सके, साथ ही साथ दुसरे बच्चों को देखते हुये उनमे भी कुछ करने की शैली जगे। इन सारी गतिविधियों को बच्चें अपनी मर्जी से हँसते खेलते करते हैं। जैसे:-

**परिचय सत्र** – बच्चों के बिच दोस्ती की भावना को बढाने के लिए परिचय सत्र करवाया जाता हैं, ताकि बच्चें समझ जाये की ये सभी हमारे मित्र हैं एवं हम सभी कोई भी गतिविधि आपस में मिलकर करे एवं सीखे। इस उम्र में बच्चें अपने उम्र एवं अपने माहौल में रहने वाले बच्चों को ही पहचानते हैं इस प्रकार उनमें आपसी बातचीत से उनकी झिझक दूर होती हैं।

**कविता एवं कहानी** – महीने के अनुसार बनाए हुये पाठ्यक्रम के आधार पे कविता कहानी, बाल गीत,एवं विभिन्न प्रकार के गतिविधि को चुनते हैं एवं उसके आधार पे बच्चों को क्लास करवाया जाता है।

**विज़िट** – प्रतिदिन 2 केन्द्रों पे विज़िट किया जाता हैं। कुल 40 केन्द्रों में 16 केन्द्रों के बच्चों के साथ परिवर्तन में क्लास करवाया जाता हैं एवं बाकि के साथ विज़िट किया जाता हैं। परिवर्तन में आये बच्चों के साथ जो गतिविधि करवाया जाता हैं, बिल्कुल वही गतिविधि केन्दों पे विजित के दौरान करवाया जाता हैं। केन्द्रों पे टीचिंग लर्निंग मैटेरिअल का उपयोग ज़्यादा किया जाता हैं।

**कार्यशाला** – बच्चों के क्लास के साथ साथ यहाँ पर कार्यशाला भी करवाया जाता हैं। जिसका नाम इस प्रकार से है

- **गुनगुन कार्यशाला** – इस कार्यशाला का मुख्य उदेश्य यह हैं की बच्चों के साथ साथ सेविका भी नयी नयी गतिविधि देखे समझे और अपने केंद्र के बच्चों के साथ करें। पिछले बार यह कार्यशाला

दिनांक 15-18 जुलाई 2017 को क्रमशः नरेन्द्रपुर, जमापुर, भरौली एवं गोंठी केंद्र पे करवाया गया। ये कार्यशाला प्रत्येक 6 माह पर होता हैं एवं कुल 4 केन्द्र के बच्चों को एक केद्र पे इकट्ठा किया जाता हैं।

- **नन्हे कदम कार्यशाला** – इसका उदेश्य यह हैं की बच्चों के द्वारा किये हुये गतिबिधि को बच्चों के अभिभावक देखें एवं अंदाजा लगाये की बच्चों में कितना बदलाव आया हैं। यह कार्यशाला प्रत्येक 5 महीने पे आयोजित किया जाता हैं। पिछले बार यह कार्यशाला दिनांक 20-03-2017 एवं 21-03-2017 को क्रमशः बंथू सलोना एवं बंगरा उज्जैन केंद्र पर आयोजित किया गया था।

- **धमाचौकड़ी कार्यशाला** – इसका उदेश्य यह हैं की नए एवं पुराने सीखे हुये गतिविधि का बच्चें पूर्वाभ्यास करें। यह कार्यशाला भी प्रत्येक 5 महीने पर आयोजित किया जाता हैं। पिछले बार का यह कार्यशाला दिनांक 21-24 अगस्त 2017 को परिवर्तन बालघर आँगन में आयोजित किया गया था। जिसमें बहुत सारे बच्चें ऐसे भी आये थे, जो पिछले बहुत दिनों से किसी कार्यशाला में हिस्सा नहीं लिए थे।

- **सेविका कार्यशाला** – इस कार्यशाला का मुख्य उदेश्य यह है की केंद्र की सेविका व् सहायिका को नए नए गतिविधि से अवगत करवाया जा सके। यह कार्यशाला प्रत्येक 4 महीने पर आयोजित किया जाता हैं। पिछले बार यह कार्यशाला दिनांक 17 जुलाई 2017 को परिवर्तन परिसर में आयोजित किया गया था, जिसमे लगभग 5 0 आंगनबाड़ी सेविकाओं की उपस्तिथि रही |

- **सेविका प्रशिक्षण**- यह प्रशिक्षण परिवर्तन परिसर में ही कराया जाता हैं। यह प्रशिक्षण इस लिए किया जाता है की सभी सेविकाएँ किये गये गतिविधि को अच्छे से सीखे एवं अपने केंद्र के बच्चों के साथ वो इस गतिविधि को करवाए। इस प्रशिक्षण में विभिन्न प्रकार के गतिविधि को सिखाया जाता हैं, जैसे कहानी (पपेट के साथ), कविता (लय के साथ), बाल गीत (गतिविधि के साथ) इत्यादि। इसके अलावे बच्चों को जागरूक करने के लिए मास्क पहनकर रोल प्ले किया जाता है। इस रोल प्ले को सेविकाएँ खुद से सभी बच्चों के साथ करती हैं।

- **जिला स्तरीय प्रशिक्षण**- दिनांक 15/07/2017 को जिला स्तर में होने वाले सुपरवाइजर प्रशिक्षण में परिवर्तन परिसर से बाल घर आँगन के २ कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया एवं सभी सुपरवाइजर लोगों को परिवर्तन के बाल घर आंगन में होने वाले सभी गतिविधियों से अवगत करवाया गया, साथ ही साथ परिवर्तन में हो रहे अन्य सभी कार्यों को बहुत बारीकी से बताया गया। जिरादेई, बडहरिया एवं अन्य ब्लाक की सी०डी०पी०ओ लोगों ने परिवर्तन के द्वारा हो रहे सभी सामुदायिक कार्यों को सराहा एवं उज्जवल भविष्य की कामना की, साथ ही साथ सभी सुपरवाइजर लोगों का कहना था मेरे भी पंचायत के साथ परिवर्तन काम करे तो अच्छा होता।

इन्ही बातो को समेटते हुये हमार अंगना पत्रिका को रिलीज किया जाता हैं, जो की प्रत्येक आठ माह पर निकलता है।

## सेविकाओं की बातें

**उमरावती सिंह, ग्राम+पंचायत नरेन्द्रपुर** - इनको परिवर्तन से काफी लगाव हैं। बिना प्रशिक्षण के ही उमरावती सिंह परिवर्तन आती रहती हैं और बच्चों के साथ व्यायाम कराना, पेंटिंग कराना एवं अन्य सारी चीजे उनको बहुत अच्छा लगता हैं। यहाँ से पेंटिंग सिख कर अपने आंगनबाड़ी केंद्र पर बहुत ही सुन्दर तरीके से बहुत सारी पेंटिंग कर के सजाई हैं, जो देखने में बहुत अच्छा लगता हैं।

**परवीन खातून, गजियापुर** – इनके केंद्र पे हम विज़िट के लिए गये थे तो इनको लग रहा था की हमारे केंद्र पे कोई बड़ा आदमी आ गया हैं। इनके ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। कुछ देर उनसे टीचिंग लर्निंग मैटेरियल पर बात हुयी, उसके बाद वो परिवर्तन के बारे में बताने लगी, की परिवर्तन एक अदभुत जगह हैं वहा जाने के बाद घर आने का मन नहीं करता हैं। लगता हैं की परिवर्तन जन्नत हैं।

**संगीता देवी, छियासी** – संगीता जी परिवर्तन में होने वाले गतिविधियों से बहुत खुश रहती है, और अपने तीन साल के लड़के को परिवर्तन रोज भेजती हैं। वो बताती है की

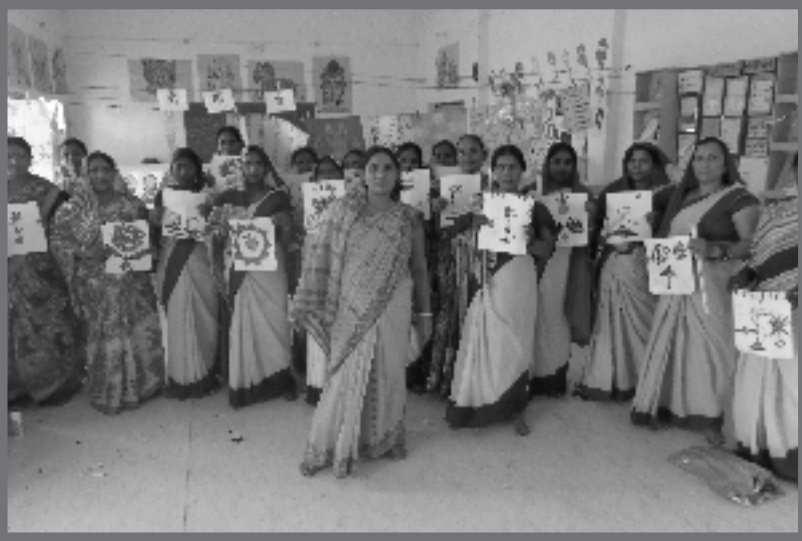

पहले हमारा बच्चा ज्यादा नहीं बोलता था पर जब से परिवर्तन जाने लगा वहा के बच्चों के साथ मिलकर बहत कुछ सिख लिया है, और वहा से आने के बाद अपने केंद्र पे अन्य बच्चों को सिखाता भी हैं।

**मिंटू देवी, ग्राम संथू –** मिंटू जी अपने सेंटर पे अपने बच्चों के साथ काफी मेहनत करती हैं। जितने गतिविधि को वो परिवर्तन से सीखी हैं, उन सारे गतिविधि को वो अपने केंद्र के बच्चों को सिखाती हैं।

**उषा देवी -** मैं जब विजित के दौरान उनके केंद्र पे जाती हूँ तो उषा जी यही बोलती है की परिवर्तन में साफ सफाई बहुत ज्यादा हैं। वहा का कोई भी ऐसा जगह नहीं हैं, जहा पे बिना कुर्सी के नीचे न बैठा जा सके।

नरेन्द्रपुर पंचायत की सभी सेविका 15 अगस्त के शुभ अवसर पर परिवर्तन परिसर में गाना गाने के लिए एक माह पहले से तैयारी करने लगती हैं। और हमको बुलाकर गाना सुनती हैं, की ये गाना कैसा हैं बताइए।

## बच्चों की बातें

काजल कुमारी, बंथू सलोना – ये बच्ची ललिता जी के केंद्र से आती है। जिस दिन कविता पाठ समारोह था, सारे बच्चें कविता प्रस्तुत किये थे तो इनको परिवर्तन के तरफ से प्रमाणपत्र और बिस्किट मिला था। काजल बोल रही थी "मैडम जी ई आधार कार्ड ह नु" फिर मै उसको समझाई की नहीं ये आधार कार्ड नहीं हैं। जो तुम लोग कविता प्रस्तुत किये न उसी का प्रमाण पत्र मिला हैं।

**शिवाजी, धरमपुर –** "रंग खेल के सब लईका लोग पखारा में नाहा नाहा के आवत रहुये लोग। साझीखान नया नया कपड़ा पहिन के खूब अबीर खेलुई सन"

**अंकुश कुमार, बंगरा उज्जैन –** नन्हे कदम कार्यशाला ख़त्म होने के बाद अभिभावक को कैलेण्डर दिये। अंकुश उस कैलेण्डर को अपने

दादी को दिखाते हुये बोला "ए दादी देख नु हेदे हमनी के फोटो बा कैलेंडर में"

**खुशबू कुमारी, नारायणपुर** – ये कभी परिवर्तन की जब गाड़ी जाती थी तो छुट जाती थी अपने केंद्र पे ही तो अपने गाँव से मंदिर के रास्ते होते हुये परिवर्तन चली आती थी।

**लाली कुमारी, बंगरा उज्जैन** – यह बच्ची सुमन जी के केंद्र की हैं बोलती थी "हम जब खेत में दादी के साथे जानी त हमारा खेत में से परिवर्तन लउकेला, तब हम अपना दादी से कहेनी की हाउ जवन परिवर्तन बा नु ओहिमे हम गाड़ी से रोजीना पढ़े जानी"

**माधवी कुमारी, बंथू सलोना, उम्र 3 साल** – माधवी को किसी कारणवश परिवर्तन में नहीं आती है। उस दिन माधवी दिन भर रोती ही रह जाती हैं। जिस दिन उसे परिवर्तन आना रहता है उस दिन सुबह से ही उसकी बुआ उसे ले के बैठी रहती है की छुट न जाये।

**साहिल कुमार, उम्र 5 साल बडहुलिया केंद्र** – साहिल कुमार अमिता जी के केंद्र से आता हैं एक दिन वो ग्रुप एक्टिविटी में पर्जल

बना रहा था। पज़्ज़ल का आकार लड़का था, जोड़ते समय उसका हाथ नहीं था। साहिल मुह बनाकर हमारे पास आया और बोला मैडम जी इस लड़का का हाथ नहीं हैं। फिर मै तुरंत कार्टून से हाथ निकल के दी। जैसे ही वो उस पर्जल में हाथ लगाया, खूब जोर जोर से हसने लगा।

**सलमा खातून उम्र 5 साल** – जब मैं विजिट करने बंथू सलोना मीरा जी के केंद्र पर गयी उसी समय सलमा हमको देखते ही कहने लगी "मैडम जी वो हाथ में लगाने वाला पपेट नहीं लायी हैं, वो मुझे बहुत अच्छा लगता हैं"।

**आलिया खातून, उम्र 3 साल** – वो तुतलाते हुये बता रही थी की "मैडम जी हमको परिवर्तन आके मोती का माला बनाना और माला पहनना बहुत अच्छा लगता है"।

**अमित और प्रिंस** – ये दोनों संथू मिंटू जी के केंद्र का बच्चा है। हम जब विजित में गये थे तो सुने की ये दोनों आपस में बात कर रहा था की आज बारिश के कारण बच्चें कम आये हैं तो आज हमलोगों को अंडा जरुर मिलेगा।

**पल्लवी कुमारी उम्र 5 साल** – वो बता रही थी की परिवर्तन में झुला हैं , अगर उसमें और झुला लग जाता तो अच्छा होता।

## हमारा अनुभव

**मधुबाला देबी, बाल फैसिलिटेटर** :- हमारे बालघर आँगन में 3-6 साल के बच्चें आते हैं। बच्चों की भाषा बड़ो की भाषा से अलग होती है। कुछ दिन तक इन बच्चों के साथ उनकी भाषा में पढाना पड़ता है। सबसे पहले मैं उनलोगों की बोल चाल की भाषा सुधार करती

हूँ, फिर कुछ दिन बाद बच्चें धीरे धीरे भाषा सिख जाते हैं। इन बच्चों के साथ साथ सेविका सहायिकाओं से भी लगाव हो जाता हैं। सेविका सहायिका भी पूरा पूरा सहयोग करती हैं, इसके साथ साथ समुदाय में बच्चों के अभिभावकों का एवं सी०डी०पी०ओ का भी पूरा सहयोग मिलता हैं, जिससे हमारा पूरा कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हो पता है।

**रिंकू कुमारी, सहायक फैसिलिटेटर–** :- मैं ग्राम गोंठी की निवासी हूँ। मुझे परिवर्तन से जुड़े हुए लगभग एक साल हुए हैं। मैं बालघर आँगन में आंगनबाड़ी केंद्र के बच्चों के साथ काम करती हूँ। इन सभी छोटे बच्चों के साथ काम करना बहुत अच्छा लगता हैं, क्यूँ की ये सारे बच्चें मेरे छोटे भाई बहन की तरह होते हैं।